→ राजस्थान में चित्रकला के निम्न स्कूल है:-
① मेवाड़ स्कूल ② मारवाड़ स्कूल ③ हाड़ौती स्कूल ④ ढूंढाड़ स्कूल।

① मारवाड़ / जोधपुर शैली →

- लामा तारा नाथ ने मरु प्रदेश में चित्रकार श्रृंगधर का उल्लेख किया है जिसने पश्चिमी भारत में यक्ष शैली को जन्म दिया (अंगों का नुकीला रूप)
- मारवाड़ शासक मानसिंह ने इस शैली को चरम पर पहुँचाया।
- मानसिंह के समय नाथों से सम्बन्धित चित्र बने (मानसिंह नाथ सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- मारवाड़ शासक तख्तसिंह के समय कम्पनी शैली को महत्व मिला। अर्थात यूरोपिय पद्धति पर आधारित चित्र बनें।
- मारवाड़ शासक ~~मानसिंह~~ के समय प्रमुख चित्रकार थे। शिवदास भाटी, नारायण भाटी, रतन भाटी, बिशनदास, अमरदास, रामू, कालु, छज्जु आदि।
- मारवाड़ शासक गजसिंह के समय प्रमुख कलाकार वीरजी नारंगा था। जिसने रागमाला को चित्रित किया।
- इस शैली में लाल व पीले रंग का प्रयोग किया गया।
- इस शैली का प्रमुख विषय - प्रेम आख्यान,
- प्रमुख चित्र → रूपमति - बाज बहादुर, मूमल - निहालदे, ढोला-मरवण, कल्याण रागिनी।

SMC Education
SMC Education www.Resultuniraj.co.in

— इस शैली में आम्र वाटिका, घोड़े, कुत्ते, गड़गड़ाती बिजली के गोलाकार बादलों को चित्रों में दर्शाया गया है।

② मेवाड़ शैली → मेवाड़ शैली का स्वर्णकाल मेवाड़ शासक अमर सिंह के समय माना जाता है।

— मेवाड़ चित्र शैली में लघु चित्रण का स्वर्ण काल मेवाड़ शासक जगत सिंह-I के समय माना जाता है।

— जगत सिंह ने मेवाड़ में एक चित्र शाला का निर्माण किया। जिसे चितौरों की ओवरी अथवा तस्वीरां रो कारखानो के नाम से सम्बोधित करते हैं।

— मेवाड़ शासक जयसिंह के समय लघु चित्र सर्वाधिक संख्या में बने।

— मेवाड़ शैली पर वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव है अर्थात कृष्ण के जीवन से सम्बंधित चित्र बने।

— मेवाड़ शासक भीमसिंह के समय भित्ति चित्रों का निर्माण हुआ।

— अमरसिंह का प्रमुख चित्रकार निसारदीन था जबकि जगतसिंह के समय प्रमुख चित्रकार साहबदीन तथा मनोहर थे।

— मेवाड़ शैली के चित्रों में चमकीला पीला रंग है।

— मेवाड़ शैली के अन्तर्गत नाथद्वारा शैली का विकास हुआ।

— नाथद्वारा शैली में पीले तथा हरे रंग का प्रयोग। इस शैली के चित्रों में प्राकृतिक परिवेश, शिकार के दृश्य, दरबार के दृश्य, अन्तःपुर के दृश्य, राजसी ठाठ-बाट कृष्ण के बालस्वरूप से संबंधित चित्र, शृंगार सवारी के चित्रों को चित्रित किया है।

SMC Education www.Resultuniraj.co.in

— नाथद्वारा शैली के प्रमुख कलाकार → नारायण चतुर्भुज, घासीराम, कमला, चौखा, बैज वैद्यनाथ इस शैली के चित्रकार थे।

— इस शैली में गायों का मनोरम दृश्य भी चित्रित किया गया है।

③ झालावाड़ शैली → यह शैली प्रारम्भिक स्वरूप बूंदी शैली है, कोटा रियासत के स्थापित हो जाने के बाद 18 वीं शती के प्रारम्भ में अपना अलग अस्तित्व कायम किया।

— क्षेत्र → कोटा, बूंदी, इन्दरगढ़

रंग → लाल, हरा व सफेद

कलाकार → सुरजन, अहमद, रामलाल।

विषय → राग-रागिनी, बारहमासा, कृष्ण-लीला।

④ ढूंढाड़ शैली (आमेर-जयपुर) →

क्षेत्र → आमेर जयपुर, शेखावाटी

विषय – धार्मिक चित्र, राजाओं, सरदारों की शबीहें।

रंग → लाल, पीला, हरा, सुनहरा, मोतीयों का प्रयोग।

SMC Education www.Resultuniraj.co.in